मई २०१२
कीमत रु १२/-
दादा भगवान परिवार का
अक्रम एक्सप्रेस
छुट्टियों का मज़ा

अक्रम एक्सप्रेस

छुट्टियों का मज़ा

संपादकीय

बालमित्रों,

अच्छी मज़ेदार छुट्टियाँ हैं और खूब अच्छी-सी गर्मी भी है, और गर्मी में ठंडक देनेवाला यह अच्छा मज़ेदार अक्रम एक्सप्रेस खास छुट्टियों के मज़े को ध्यान में रखकर बनाया गया है। ढेर सारी कहानियाँ इस अंक का खास आकर्षण हैं। साथ में और भी बहुत कुछ नया-नया है, जो तुम्हें बहुत अच्छा लगेगा, तो हो जाओ तैयार पढ़ने के लिए..........,

- डिम्पल मेहता

अनुक्रमणिका

मीठी यादें १
सुखी आदमी का कुरता २
भगवान तो 'भाव' के भूखे ४
खानदानी ५
दादाजी कहते हैं ६
भाव विज्ञान ७
फूड कोर्नर ११
चलो खेलें १२
ऐतिहासिक गौरवगाथाएँ १४
जानने लायक १६
किड्स केम्प की झलक १७

संपादक :
डिम्पल महेता
वर्ष : १ अंक : १
अखंड क्रमांक : १
मई २०१२

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
अहमदाबाद : (०७९) २७५४०४०८, २७५४३९७९

राजकोट त्रिमंदिर : ९२४१११३९३
वडोदरा : (०२६५) २४१४१४२
मुंबई : ९३२३५२८९०१-०३
यु.एस.ए. : ७८५-२७१-०८६९
यु.के. : ०७९५६४७६२५३
Website: kids.dadabhagwan

Printed, Published and Owned by :
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Printing Press:-
Amba Offset
Basement, Parshvanath Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यु.एस.ए. :१५ डॉलर
यु.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५५० रुपये
यु.एस.ए. : ६० डॉलर
यु.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

मीठी यादें

नीरू माँ की सेवा में एक बहन थी। नीरू माँ से मिलने के लिए आनेवाले लोगों का समय निश्चित करने की सेवा में थी। नीरू माँ ने उनसे कहा कि तुम अपने पास थोड़ा नाश्ता रखा करो ताकि जब भूख लगे, तब खा सको। अतः उन बहन ने अपने पास सेंव मुरमुरों का डिब्बा रख लिया।

एक बार नीरू माँ ने उनसे पूछा, ''तुम्हारे पास क्या नाश्ता है? ले आओ।'' वे बहन तो जल्दी से जाकर सेंव मुरमुरे का डिब्बा ले आई और नीरू माँ को दिया। नीरू माँ ने मुट्ठी भरकर खाना चाहा। तभी वह बहन ने उन्हें रोकते हुए कहा, ''यह मत खाइए नीरूमाँ। यह ४-६ दिन पुराना है। मैं आपके लिए दूसरे ले आती हूँ।'' यह सुनकर नीरूमाँ ने कहा, ''क्यों? तुम भी तो यही खाती हो न?'' ऐसा कहकर मुट्ठी भरकर मुरमुरे खाए।

दो-तीन दिन के बाद उन बहन को पता चला कि उनके डिब्बे में से मुरमुरा खाकर नीरू माँ यह जानना चाहती थीं कि रसोई में खाना कैसा बनता है।

देखा मित्रों, नीरू माँ घर में बैठे-बैठे भी सबका ध्यान रखती थीं।

भाई दूज का दिन था। नीरू माँ ने अपने भाई-भाभी को खाने पर बुलाया था। खाने में वडापाउ और पैप्सी थी। सबका भोजन हो जाने के बाद नीरू माँ रसोई में आई। दो ब्रह्मचारी बहनें खाना खा रहीं थीं। नीरू माँ कुर्सी लेकर वहाँ बैठ गई। दो में से एक बहन ने पैप्सी नहीं ली थी। यह देखकर नीरू माँ ने उससे पूछा, तुमने पैप्सी क्यों नहीं ली? दूसरी बहन ने जवाब दिया, "ये पैप्सी नहीं पीती।" यह सुनकर नीरू माँ ने कहा, "मुझे एक पैप्सी दो।"

दोनों बहनों को आश्चर्य हुआ। नीरू माँ ने खाना खा लिया है, फिर पैप्सी क्यों माँग रहीं हैं? दूसरी बहन ने तुरंत उठकर नीरूमाँ को नई पैप्सी खोलकर दी, नीरू माँ ने उसमें से दो-तीन घूँट पीए और जो बहन पैप्सी नहीं पीती थीं, उन्हें दी और कहा, " लो अब पी जाओ। " यह देखकर उन बहन के मुँह पर एकदम खुशी छा गई, हास्य छलक गया, अब यह पैप्सी, पैप्सी नहीं रही थी, परंतु नीरू माँ का प्रसाद बन गई थी। नीरू माँ की प्रसादी कौन नहीं लेगा? उन्होंने पैप्सी ली और बाकी बची सारी पी गई।

देखा मित्रों, नीरू माँ सबके खाने-पीने का बहुत ध्यान रखतीं थीं। सबको सबकुछ मिला है या नहीं, सब ठीक से खाते हैं या नहीं, और प्रेम से सभी की पसंदीदा का खाना खिलातीं थीं।

सुखी आदमी का कुरता

एक गाँव था। तीस हज़ार जितनी आबादी होगी। गाँव के राजा का नाम त्रिविक्रम था। राजा अत्यंत विलासी थे। एक तरफ प्रजा के दुःख-दर्द का ध्यान रखते थे लेकिन दूसरी तरफ विलासी जीवन जीते थे। बहुत अधिक भोग-विलास के कारण राजा बीमार पड़ गए। सख्त बीमार हो गए। उस पर फिर अनिद्रा का रोग हो गया। बीमारी असह्य हो गई थी।

एक दिन एक साधु राजमहल में आए। उन्हें राजा के पास ले जाया गया। राजा को देखकर वे उनकी बीमारी की जड़ में पड़े भोग विलास को जान गए। अधिक से अधिक सुखी होने के लिए उसने अधिक से अधिक भोग सामग्रियाँ, रानियाँ आदि कितनी ही चीज़ों का ढेर लगा लिया। उन्होंने यह सब जाना और देखा, 'इसके बावजूद भी राजा को तृप्ति नहीं मिली थी।'

उसने कहा, "महाराजा त्रिविक्रम ! यदि किसी सुखी आदमी का कुरता लाकर आपको पहनाए जाएँगे, तो चौबीस घंटों में आपका रोग निर्मूल हो जाएगा।"

राजा ने नौकरों को वैसा कुरता लाने के लिए चारों दिशाओं में दौड़ा दिया। राजा तो यहि समझता था कि सुखी आदमी मतलब, जो बंगले में रहता हो, बड़ी हवेली में रहता हो, बड़े शहर में रहते हो, अमीरी में मग्न हो और मान-सम्मान खूब मिलता हो। अतः एक कुरता लाना कुछ मुश्किल बात नहीं लगी।

नौकर शहरों में फैल गए। जिसे भी धनवान समझा, उन सबसे पूछा। लेकिन बड़ी ही आश्चर्य जनक बात हुई कि बड़े-बड़े करोड़पति और अरबपति भी कह रहे थे कि वे सुखी नहीं हैं। सभी को कुछ न कुछ दुःख था ही।

अब क्या करें? नौकर शहर से दौड़कर गाँवों में गए, लेकिन वहाँ भी वही हालत।

अरे! फिर तो जंगल में पहुँचे। साधुओं से मिले। सारी दुनिया छोड़कर जो फ़कीर बन गए थे, वे भी दुःखी निकले। कहीं आपसी झगड़े थे, तो कहीं क्रोध अत्यंत जला रहा था। कहीं परलोक के सुखों की लालसा तीव्र हो गई थी।

अंत में नौकर पर्वतों पर चढ़े। वहाँ घूमते-घूमते टूटी-फूटी झोंपड़ी में बैठा हुआ एक 'आदमी' मिल गया। एक लंगोटी के सिवाय उसके शरीर पर और कुछ भी नहीं था। उसके मुख पर सुख की आभा देखकर नौंकरों ने उससे पूछा, "तू वास्तव में सुखी है?" उसने उत्तर दिया, "हाँ, मैं सुखी हूँ। मुझे किसी प्रकार का दुःख नहीं है।"

यह सुनकर नौकरों ने उसे राजा के पास चलने की विनती की। उसने कहा, "भाई, मुझे क्यों राजा के पास जाना चाहिए? मुझे उनसे कोई

काम नहीं है।''

नौकरों ने कहा, ''अरे भाई, राजा को तुझसे काम है, इसलिए तू चल।''

उस आदमी ने कहा, ''राजा को मुझसे काम हो तो वे यहाँ आएँ।'' यानी कि वह किसी भी तरह नहीं माना।

अंत में नौकर नगर में वापस आए। मंत्रियों से बात की। राजा की बीमारी हर घंटे बढ़ती ही जा रही थी। मंत्री घोड़े को चाबुक मारते हुए, पवनवेग से उस आदमी के पास पहुँचे।

हाथ जोड़कर नमस्कार करके मंत्रियों ने खूब आदर के साथ उन्हें नगर में पधारने की विनती की। उस आदमी ने कहा, ''मुझे राजा के पास जाने की कोई ज़रूरत नहीं है। मुझे किसी बात का दुःख नहीं है। मैं हर तरह से सुखी हूँ। तुम लाख उपाय करोगे तो भी मैं आनेवाला नहीं हूँ।''

मंत्रियों को उसके दृढ़ वचन का विश्वास होने पर उन्होंने कहा, ''ठीक है भाई! तो एक काम करो। आप अपना कुरता हमें दे दो। हम वे ले जाते हैं। उसके लिए जितनी आप कहो उतनी सोने की मुहरें देंगे।''

आदमी ने कहा, ''भाईयों, कपड़े थे इसीलिए तो मैं दुःखी था। वे उतारने के बाद मैं संपूर्ण सुखी हो गया हूँ। मेरे पास कपड़े नहीं हैं, कुछ भी नहीं है।''

उसने आगे कहा, ''भाईयों! मेरे पास बहुत कुछ था। लेकिन वह बहुत कुछ ही मेरे लिए दुःखदायी बन गया था। तब तक मुझे संतोष रहता ही नहीं था।फिर मैं कम करता गया। जैसे-जैसे कम करता गया, वैसे-वैसे शांति होने लगी। अंत में मैंने कपड़े भी फेंक दिए। और तब मेरे आनंद की सीमा न रही। ज़रूरतें जितनी कम, उतने अधिक सुखी।''

बेचारे मंत्री! अब क्या करें? उतरे हुए चेहरे लेकर वे राजा के पास गए। राजा को उस भाई की सभी बातें बताई, कुरता न ला सकने के कारण दुःख व्यक्त किया। राजा के अंतिम श्वास चल रहे थे। मंत्रियों की बात सुनकर राजा समझ गए कि मुनि उन्हें क्या सीख देना चाहते थे। अब उन्हें मरने का दुःख नहीं रहा था। अपनी भूलों की माफी माँगते-माँगते उनकी मृत्यु हुई ।

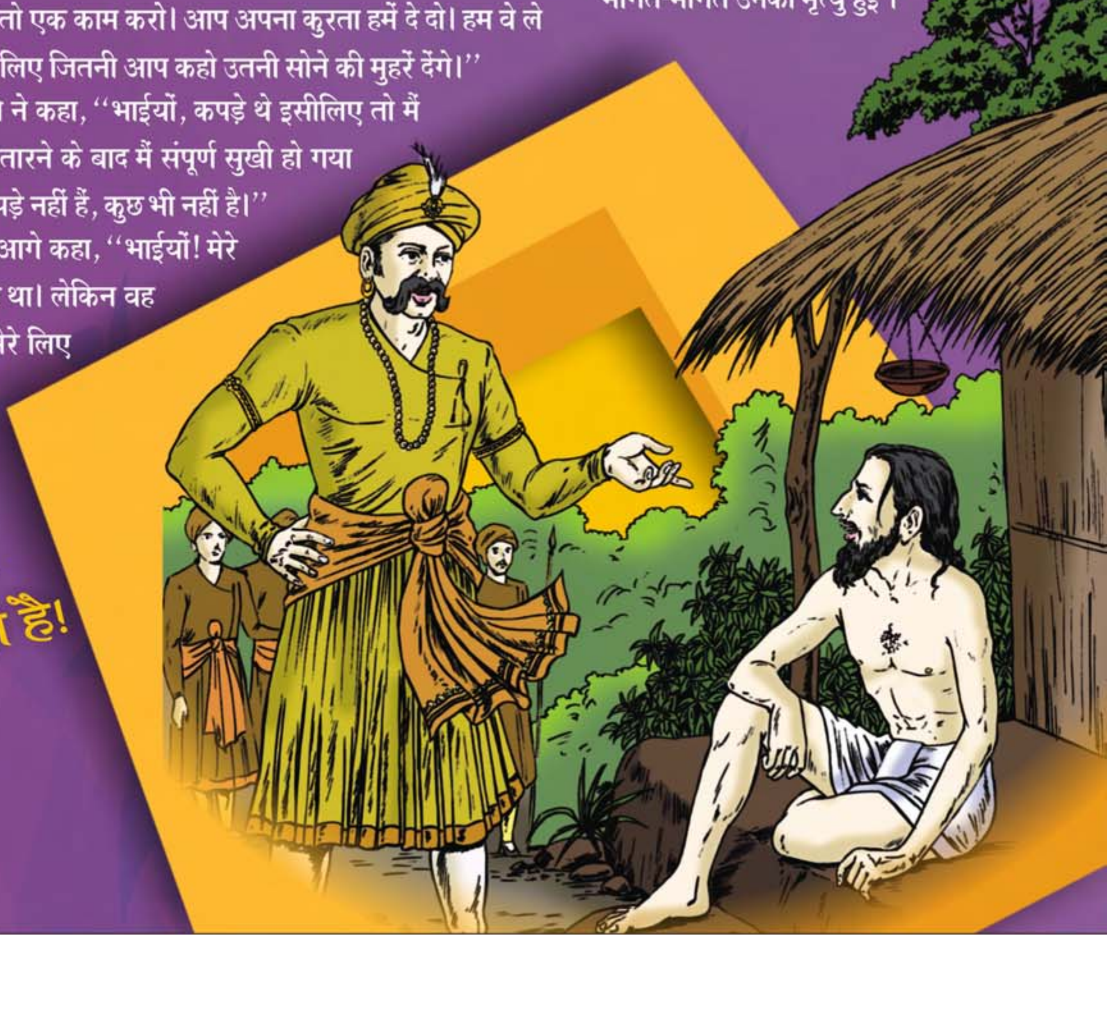

वास्तव में सुख तो संतोष में ही है!

भगवान तो 'भाव' के भूखे

किसी भक्त के यहाँ स्वामी सहजानंद पधारे। भक्तानी तो सचमुच में भक्तानी ही थी। उन्होंने स्वामीजी के लिए बड़े ही भाव और प्रेम से पूरी रसोई बनाई।

स्वामीजी को भोजन करवाने के बाद स्वामीजी से उस भोली स्त्री ने भावविभोर होकर कहा, ''स्वामीजी! अब दूघ ले आऊँ ?'' उनका भाव टूट न जाए इसलिए इच्छा न होते हुए भी स्वीमी ने दूध लाने के लिए हाँ कह दिया।

भक्ति में पागल वह स्त्री दूध के बदले छाछ का बर्तन उठा लाई। और दो-तीन बार ग्लास भर-भरके स्वामीजी को छाछ पिलाई। हर एक ग्लास पीते हुए स्वामीजी बोलते गए, ''दूध तो इतना अच्छा बनाया है कि बस, पीते रहने का ही मन होता है।''

उस स्त्री को यदि यह मालूम हो जाए कि, वह दूध के बदले छाछ देने की भूल कर रही है, तो उसे बहुत दुःख होगा। ऐसा न हो इसलिए स्वामीजी नाटक करते रहे और वे बहन भी खूब प्रफुल्लित रहीं।

स्वामीजी के जाने के बाद जब उसे अपनी भूल पता चली, तब उनसे माँफी माँगने के लिए वह तुरंत ही उनके ठहरने के स्थान पर दौड़कर गई।

स्वामीजी ने प्रेम से कहा, ''बहन तुमने इतने प्रेम से हमें छाछ पिलाई कि सचमुच वह हमें दूध से भी अधिक मीठी लगी।''

सामनेवाले के दिल को ज़रा भी ठेस न पहुँचे उसका कितना ध्यान!

इसका नाम खानदानी

एक शहर में रामदास नाम का सेठ रहते थे। सही अर्थ में वे रामदास ही थे। उनके घर में एक स्त्री रहती थी। छोटी आठ वर्ष की उम्र से ही सेठ के घर का सब काम-काज करती थी। वफादारी और ईमानदारी के लिए सेठ उनसे बहुत खुश थे। कभी भी सेठ और सेठानी पूरा घर उन्हें सौंपकर बाहर चले जाते थे।

एक दिन की बात है। हमेशा की तरह उस स्त्री को पूरे घर की ज़िम्मेदारी सौंपकर सभी बाहर घूमने चले गए। किसी कारण से वे ज़ल्दी घर पर लौट आए। घर में घुसते ही सेठ ने देखा, वह स्त्री अलमारी खोलकर थोड़े पैसे अपने पल्लू में बाँधकर कमर में खोंस रही थी। सेठ ने उसे देख लिया है, ऐसा यदि उस स्त्री को पता चल जाता तो उसे पकड़े जाने का आघात लगता। ऐसा न हो, इसलिए सेठ ने ऐसा दिखावा किया, जैसे कि उन्होंने कुछ देखा ही न हो और घर में दूसरे दरवाज़े से अंदर आए। वह स्त्री तुरंत काम में लग गई।

सेठानी चुपचाप यह दृश्य देखती रहीं। सेठ के हर एक काम पर अटूट श्रद्धा होने के कारण वे भी कुछ बोलीं नहीं। उस रात को सेठानी ने सेठ से उनके ऐसे व्यवहार का कारण पूछा।

सेठ ने खूब प्रेम से जवाब देते हुए कहा, ''जो बहन सारी ज़िन्दगी संपूर्ण प्रामाणिक रही है। उसे एक भूल के लिए लज्जित करना, वह मेरी बड़ी क्रूरता कहलाती। उसकी इस एक भूल के लिए उसका पूरा जीवन मिट्टी में नहीं मिलाया जा सकता। मैं उसके घर पर पता करूँगा, ज़रूर वह किसी आपत्ति में होनी चाहिए।''

सेठ का जवाब सुनकर सेठानी का मस्तक आदर से झुक गया। इसे कहते हैं खानदानी।

प्रश्नकर्ता : आदर्श विद्यार्थी को जीवन के कौन-कौन से लक्षण होने ज़रूरी हैं?

दादाश्री : घर में जितने भी सदस्य हैं, विद्यार्थी उन सभी को खुश रखे और फिर स्कूल में भी जो साथ में हों, उन सभी को खुश रखे, जहाँ जाए वहाँ सभी को खुश रखे और अपनी पढ़ाई में ध्यान रखे।

जो अपने बड़ो के साथ अच्छी तरह बात करे, अच्छा बर्ताव करे, उनके सामने न बोले, वे आदर्श कहलाता है।

तुझे खुश रखना आता है? कैसे खुश रखेगा?

प्रश्नकर्ता : सबके साथ अच्छा बर्ताव करना।

दादाश्री : हाँ, बस, अच्छी तरह! और यदि कोई ख़राब बर्ताव कर रहा हो, तब?

प्रश्नकर्ता : अभी तक किसीने ख़राब बर्ताव नहीं किया।

दादाश्री : हाँ, लेकिन यदि कोई करे, तब क्या करोगे?

प्रश्नकर्ता : उसे सही रास्ते पर लाने का प्रयत्न करूँगा।

दादाश्री : नहीं, उस समय तो तुम वहाँ से खिसक जाना। जैसे, जब यह गाय सिर घुमा रही हो, तब वहाँ से हट जाते हैं न! समझ में आया न? और गाय को फिर कंकर नहीं मारना है।

प्रश्नकर्ता : ये बच्चे हैं और ये इनके माता-पिता हैं। सबको ऐसा कोई रास्ता बताइए ताकि इन्हें समझ में आए कि समाजिक जीवन कैसे जीना चाहिए।

दादाश्री : परस्पर एक दूसरे को सुख देने का प्रयत्न करे और दुःख तो देना ही नहीं चाहिए। सुख ही देने का प्रयत्न करना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : सुख की परिभाषा? किस तरह से देनी चाहिए?

दादाश्री : खुद माता-पिता के अधीन ही रहना चाहिए। बच्चे पिता के अधीन रहकर चलें, पिता के कहे अनुसार, अच्छा नहीं लगे तो भी पिता के अधीन रहे, फिर सोचेंगे, तब उन्हें शांति मिलेगी, सुख महसूस होगा भीतर, अगर उल्टा नहीं चलेगा तो।

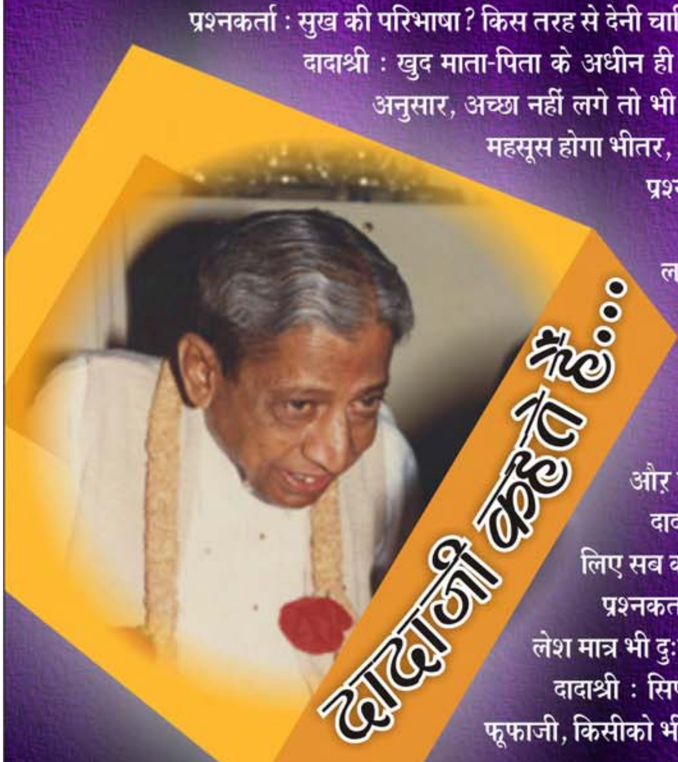

प्रश्नकर्ता : इससे सुख कैसे उत्पन्न होगा?

दादाश्री : पिता के कहे अनुसार चलेगा तो उसमें परवशता तो लगेगी कि यह परवशता है, लेकिन फिर उसमें सुख लगेगा।

प्रश्नकर्ताः अतः माता-पिता के कहे अनुसार चलना चाहिए। यह पक्की बात हुई।

दादाश्री : चलना ही चाहिए न! संसार इसी को कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : यानी कि माँ-बाप का राजीपा (गुरुजनों की कृपा और प्रसन्नता) प्राप्त करना ही चाहिए?

दादाश्री : वहाँ माता-पिता का राजीपा प्राप्त करना ही चाहिए, उसके लिए सब करना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : संसार में पहला कर्तव्य यही कहलाता है न कि, माता-पिता को लेश मात्र भी दुःख न हो। मन-वचन-काया से किसी भी तरह से, यह पहली बात।

दादाश्री : सिर्फ माता-पिता को ही नहीं, बल्कि सभी को, चाचाजी, मामाजी, फूफाजी, किसीको भी दुःख न हो, उस तरह से फर्ज़ निभाने हैं।

१६ अपनी छोटी-सी कहानी की किताब कैसे बनाओगे?

(१) पिन का पेज निकाल लो,जहाँ कैंची दिखाई है, उस लाइन पर कैंची से कागज़ काटो।

(२) बाद में बताए अनुसार पेज नं. देखकर एक के नीचे एक ऐसे लगाओ।

(३) लगाने के बाद पेज को बीच में से मोड़कर, वहाँ स्टैपलर पिन लगा दो।

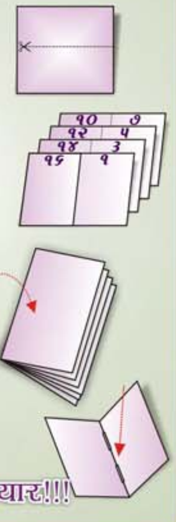

तुम्हारी पोकेट स्टोरी बुक तैयार!!!

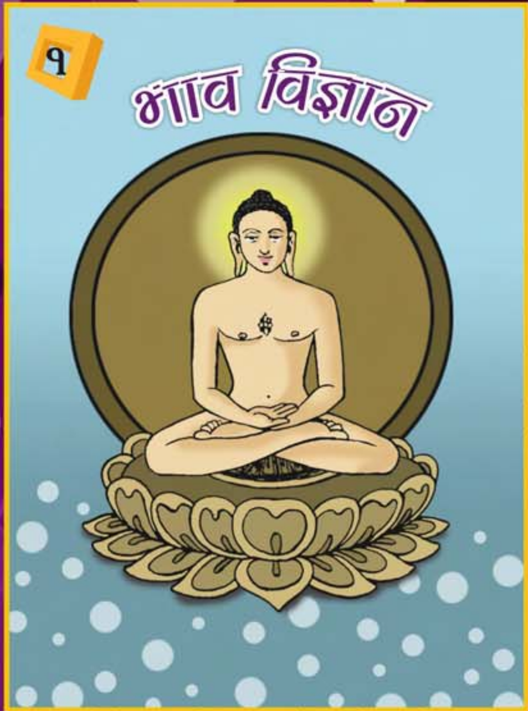

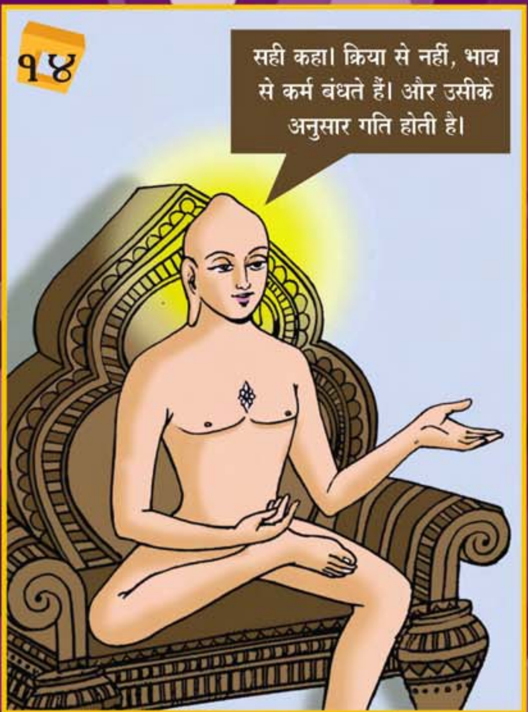

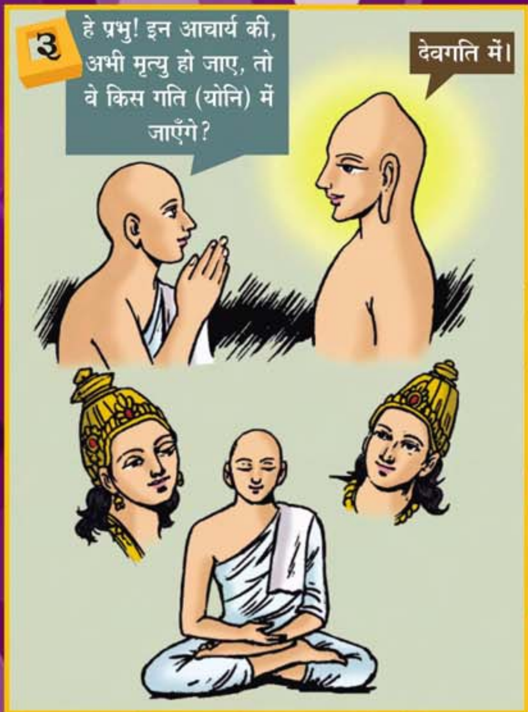

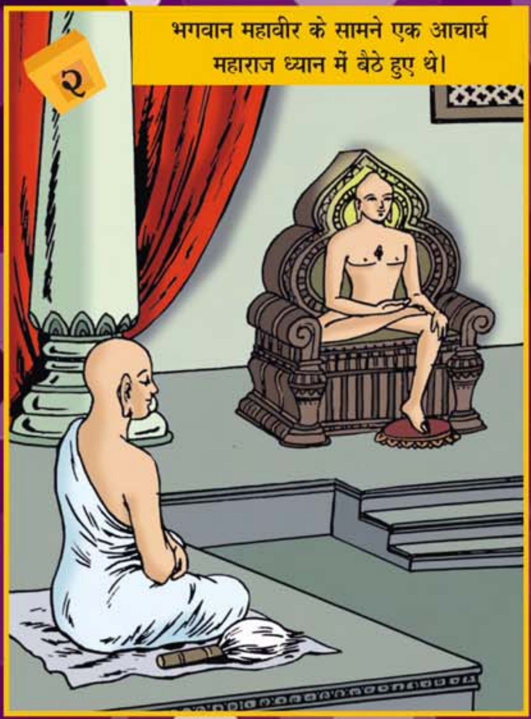
२
भगवान महावीर के सामने एक आचार्य महाराज ध्यान में बैठे हुए थे।

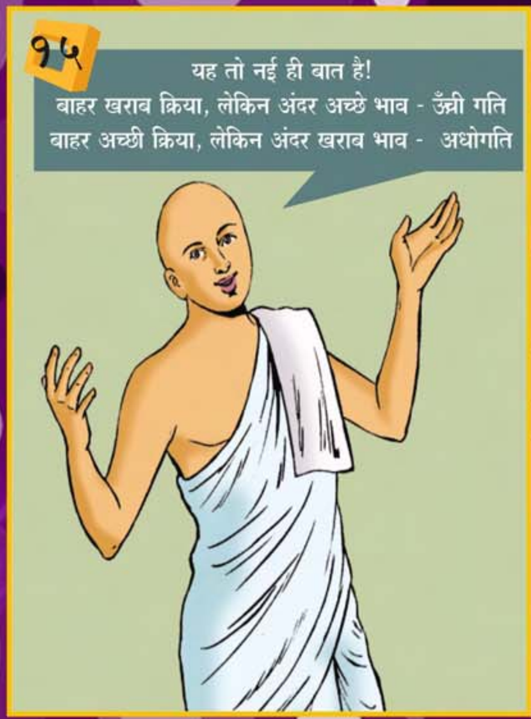
१५
यह तो नई ही बात है!
बाहर खराब क्रिया, लेकिन अंदर अच्छे भाव - ऊँची गति
बाहर अच्छी क्रिया, लेकिन अंदर खराब भाव - अधोगति

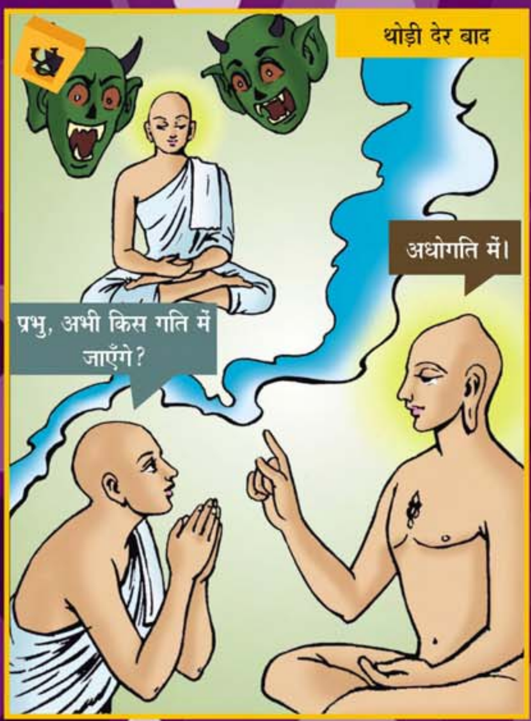
थोड़ी देर बाद
प्रभु, अभी किस गति में जाएँगे?
अधोगति में।

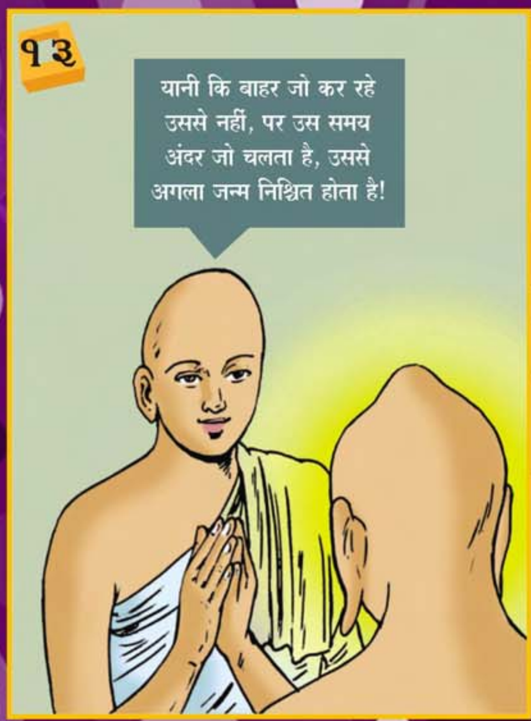
१३
यानी कि बाहर जो कर रहे उससे नहीं, पर उस समय अंदर जो चलता है, उससे अगला जन्म निश्चित होता है!

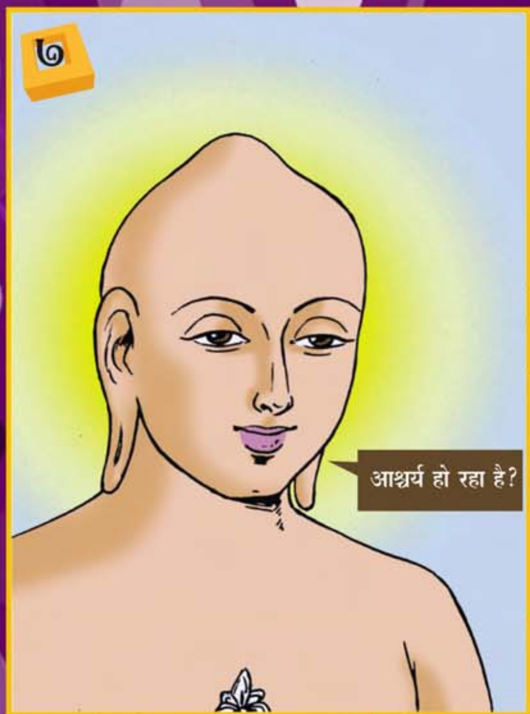
७
आश्चर्य हो रहा है?

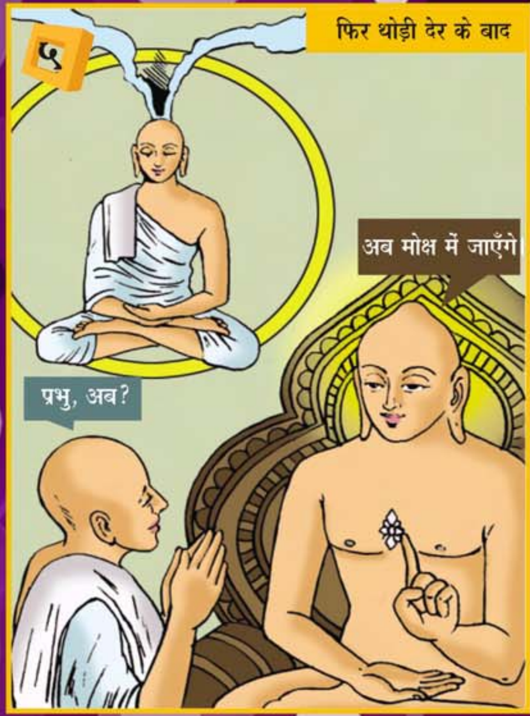
फिर थोड़ी देर के बाद
९
प्रभु, अब?
अब मोक्ष में जाएँगे।

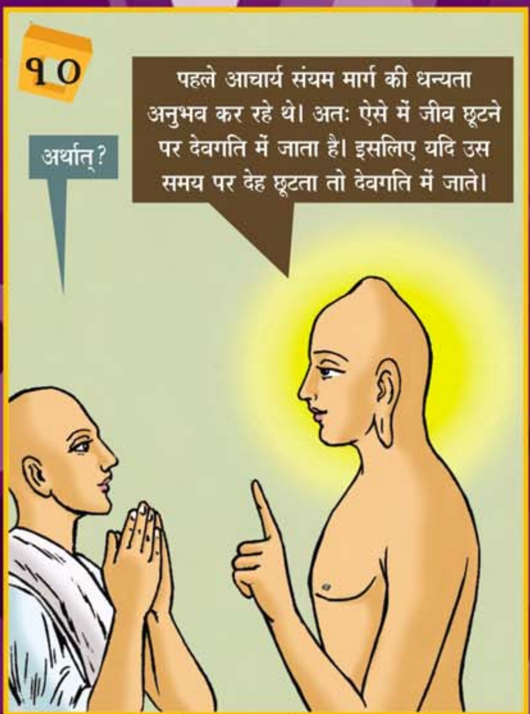
१०
अर्थात्?
पहले आचार्य संयम मार्ग की धन्यता अनुभव कर रहे थे। अतः ऐसे में जीव छूटने पर देवगति में जाता है। इसलिए यदि उस समय पर देह छूटता तो देवगति में जाते।

१२
और अंत में उन्हें अपने क्रोध पर पछतावा होने लगा और फिर वे खुद आत्मा में स्थिर हो गए, उससे मोक्ष है।

६
महाराज तो ध्यान में ही लीन हैं। फिर भी अलग-अलग गति?

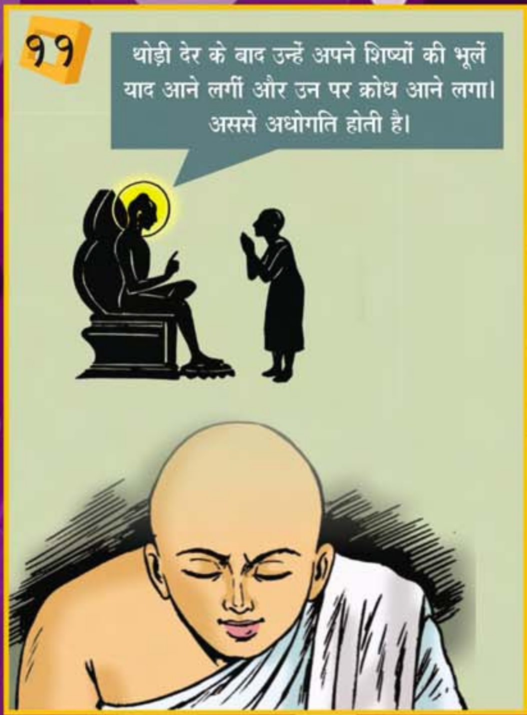
११
थोड़ी देर के बाद उन्हें अपने शिष्यों की भूलें याद आने लगीं और उन पर क्रोध आने लगा। अससे अधोगति होती है।

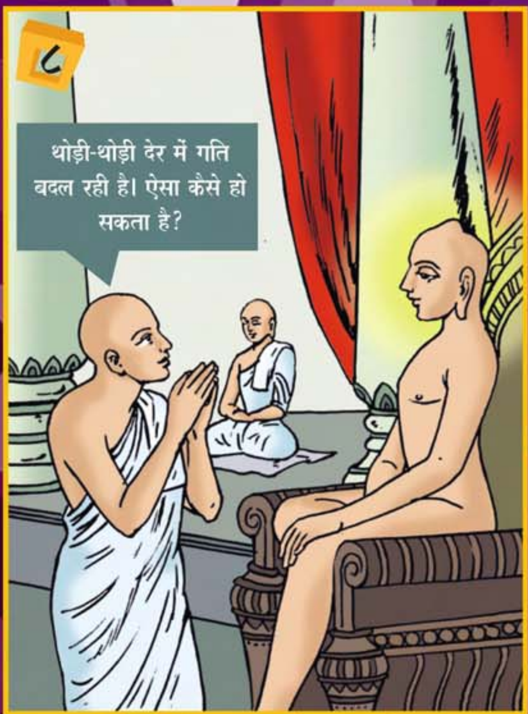
८
थोड़ी-थोड़ी देर में गति बदल रही है। ऐसा कैसे हो सकता है?

९
हमें जो दिखता है, वह आपको नहीं दिखता और आपको जो दिखता है, उसे हम नहीं देखते।

फूड कॉर्नर

प्रश्नकर्ता : बारहों महिने ये फ्रिज का ठंडा पानी पीएँ तो, वह कुछ प्रकार से नुकसान देह को तो है ही न?

दादाश्री : बहुत नुकसानकारक है। यह तुरंत पता नहीं चलता, बहुत दिनों बाद पता चलता है।

प्रश्नकर्ता : बहुत ठंडा पानी पीने से भूख कम लगती है?

दादाश्री : हाँ, भूख कम लगती है। शरीर में कुछ कैलोरी गर्मी रहनी ही चाहिए। उसके बजाय वह ठंडा करती रहती हैं। गर्मी तो अंदर है नहीं, ऊपर से ठंडा करती हैं। गर्मी तो मुख्य वस्तु है और गर्मी के आधार पर यह सब चल रहा है।

ठंडी चीज़ें रोग ज्यादा

प्रश्नकर्ता :सर्दीयाँ अच्छी नहीं होती?

दादाश्रीः सर्दीयाँ अच्छी, लेकिन वह किसके लिए अच्छी है? बिल्कुल तंदुरुस्त आदमी हो उसके लिए और बच्चों के लिए! बाकी सभी के लिए सर्दी का मौसम ख़राब हैं। क्योंकी जिसके अंदर गर्मी कम हुई उसके लिए सर्दी ख़राब। जिसके अंदर खूब गर्मी है, उसके लिए सर्दी बहुत अच्छी है।

प्रश्नकर्ता : आइसक्रीम भी अंदर जाने के बाद गरम होती है न?

दादाश्री : कुल मिलाकर ठंडा अच्छा नहीं है। इन लोगों को तो मन में ऐसा लगता है कि कोई हर्ज़ नहीं, बाकी नहीं खानी चाहिए। ठंडा-पेय, ठंडी चीज़े, वगैरह लेने जैसी वस्तुएँ नहीं हैं। ठंडा कहाँ तक, मटकी अधिक से अधिक जितनी ठंडी हो, उतना ठंडा पानी ही पीना चाहिए। बाकी बरफ जैसा ठंडा तो लिया जाता होगा कहीं? ठीक है कभी-कभी लो तो दिक्कत नहीं। इसका कोई नियम नहीं होता? जो लेते हैं न, उनके आमाशय पर असर पड़ता है। और वह तो मन में खुश होता रहता है। जितना ठंडा पीओगे तो वह सब विरुद्ध कहलाएगा। विरुद्ध आहार, विरुद्ध पेय सब नुकसान करता है।

आइस्क्रीम का असर

प्रश्नकर्ता : मुझे आइस्क्रीम बहुत अच्छी लगती है।

दादाश्री : मुझे आइस्क्रीम दो तो भार लगता है, बिना काम के इसकी क्या ज़रूरत है? दूसरा इसे खाने के लिए इंतज़ार करता है। तुम कितनी खाते हो?

प्रश्नकर्ता : दसेक डिश।

दादाश्री : जो हाथ में आया वह पेट में डाल देना है? ऐसा तो होता होगा? एक जन तो आधा किलो आइस्क्रीम खा गया था। अरे, अंदर पूछ तो सही! अंदर पूछना नहीं चाहिए, 'भाई तुम कैसे पचाओगे? पचा लोगे तो अंदर डालूँ।' यह तो पूछते करते हैं नहीं! अब यह आज ही नहीं मर गया, अतः लोग क्या समझते हैं 'कोई हर्ज नहीं, देखो पच गया न?!' अरे, अंदर रोग घुस गया! यह रोग अंदर जमे बिना रहेगा नहीं। आज नहीं मरा, लेकिन यदि सौ प्रतिशत रोग हो गया होता तो मर जाता। थोड़े प्रतिशत कम रहा, इसलिए बच गया। फिर ये कैंसर की गाठें निकलती हैं न? कैंसर के सब रोग हैं न? वे इसके ही हैं। पूछे बिना रोज़-रोज़ अंदर डालते रहते हैं! जैसे यह कोई कारखाना नहीं हो?

चलो खेलें....

१

दोस्तों, यहाँ पर दिया गया चित्र यदि ध्यान से देखोगे तो चित्र सोलह टुकड़ों में बाँटा गया है, किन्तु आपको इस चित्र में दिए गए टुकड़ों को इस तरह से जोड़ना है कि यह चित्र पहले जैसा ही बन जाए। आपमें से जो बालक इसे जोड़ देगा, वह बनेगा जीनियस! तो चलो..... आपको बनना है न जीनियस!

२

मित्रों! इस पूरी तरह से नई पज़ल में हर एक ख़ाने में टेढ़े-मेढ़े शब्दों को देखकर चौंक मत जाना। यही तो खेल है। आपको इन ख़ानों में दिए गए शब्दों में से एक वाक्य बनाना है। तो ढूँढ निकालो?..........

(१)

रे	वो	व
सु	ना	भ
भा	भ	व
	धा	

जवाब :..

(२)

हे	ख	व	सा
छे	वा	नो	र
पै	ए	तु	ग
गु			र्च

जवाब :..

३

मित्रों! इस पज़ल में शब्दों को सही जगह पर रखना है। हर एक खाने में टेढ़े-मेढ़े रखे हुए शब्दों को इस तरह से रखे कि जिससे आड़ी और सीधी दोनों लाइनों में पूरे शब्द बनें। उदाहरण हमने दे दिया है। अब आप आगे बढ़ो..........

उदारहण

ज़	याँ	ता
ब	कि	ब
ता	गी	गी

कि	ता	ब
ता	ज़	गी
ब	गी	याँ

(१) आड़ी और सीधी: किताब, ताज़गी, बगियाँ

(२) आड़ी और सीधी: कोमल,महेक,लकड़ी

क	को	ल
म	क	ल
हे	ड़ी	म

(३) आड़ी और सीधी: सपना,पहेरा,नाराज़

प	ज़	रा
हे	स	ना
ना	रा	प

४

बॉल को बास्केट में से बाहर निकालो..........

५

नीचे बताए गए चित्रों में से १२ तफ़ावत ढूँढ निकालिए....

ऐतीहासिक गौरव गाथाएँ

कृष्ण वासुदेव के गजसुकुमार नामक एक छोटे भाई थे। वे दिखने में बहुत सुंदर थे। सोमल ब्राह्मण की एक सुंदर पुत्री के साथ उनकी सगाई हुई थी। लेकिन शादी होने से पहले भगवान नेमीनाथ की देशना (वाणी) सुनकर उन्हें वैराग्य उत्पन्न हो गया, और फिर दीक्षा लेकर वे त्यागी बन गए।

उनकी बेटी का घर बसने से पहले ही बिखर गया और उसके कारण बने, उनके ही दामाद गजसुकुमार। यह देखकर सोमल ब्राह्मण को भयंकर क्रोध आया। वे गजसुकुमार को खोजने के लिए निकल पड़े।

और इस तरफ गजसकुमार की सभी कर्मों को क्षीण करके परम सुख को प्राप्त करने की मानता तीव्र हुई। भगवान नेमीनाथ की आज्ञा लेकर वे एक स्मशान में कठोर तप करने लगे।

गजसुकुमार को खोजते-खोजते सोमल ब्राह्मण उसी स्मशान में आ गए। गजसुकुमार को साधु वेश में देखकर उनके मन में तीव्र बैर उत्पन्न हो गया और उनका रोष भभक उठा।

अच्छी तरह से सीख देने के लिए उन्होंने इधर-उधर देखा, पर स्मशान में तो क्या मिले? थोड़ी देर पहले ही वहाँ स्मशान में किसी मृतदेह का अग्निसंस्कार हुआ था। वहाँ धधकते हुए कोयले पड़े हुए थे। यह देखकर सोमल की आँखों में चमक आ गई। गजसुकुमार के कोमल सिर पर

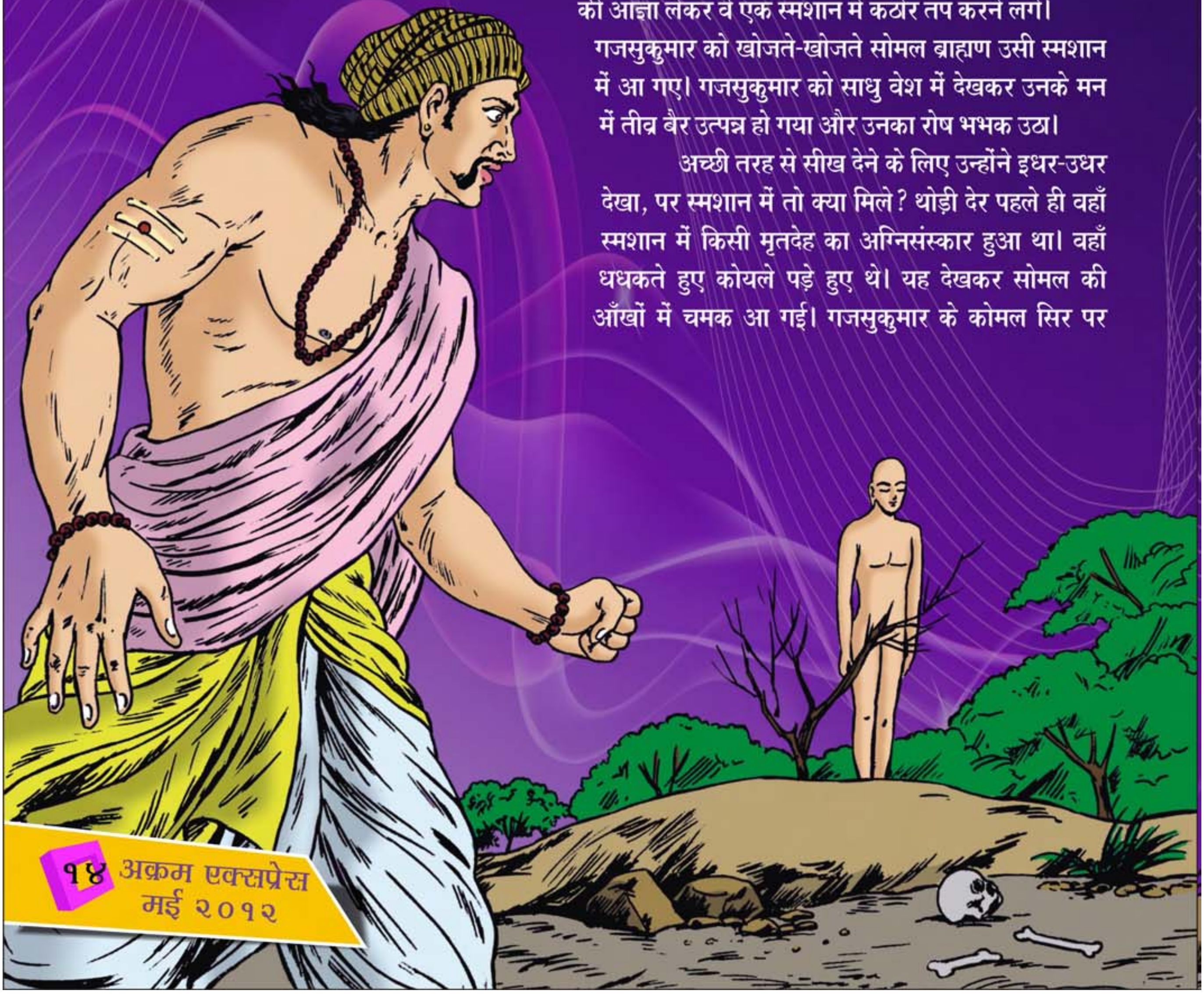

चिकनी मिट्टी का घेरा बनाया और उसके अंदर धधकते हुए कोयले भरे।

थोड़ी देर में गजसुकुमार का सिर जलने लगा। कोमल शरीर जलने लगा। अतः सोमल वहाँ से चला गया। असह्य पीड़ा होने लगी। धीरे-धीरे खोपड़ी फटने को हुई।

आत्मज्ञान प्राप्त किए हुए गजसुकुमार को दीक्षा का समय याद आया। दीक्षा के समय भगवान ने उन्हें कहा था कि कोई भी दुःख आ पड़े तब याद रखना कि आत्मा आकाश जैसा सूक्ष्म है। कोई भी दुःख सूक्ष्म को छू नहीं सकता।

भगवान के शब्द याद आते ही गजसुकुमार आत्मा में स्थिर हो गए। ''अग्नि तो स्थूल है और मेरा स्वरूप आकाश जैसा सूक्ष्म है। अग्नि मुझे कैसे जला सकती है?'' उनके हृदय में किंचित् मात्र भी क्रोध या द्वेष उत्पन्न नहीं हुआ। बल्कि उन्होंने सोचा, ''देखो! अगर मैंने इनकी बेटी से शादी की होती तो वे शादी के समय पगड़ी पहनाते। वह पगड़ी तो थोड़े समय में फट जाती और परिणामतः दुःख दायक बनती। यह तो उन्होंने मुझे मोक्ष की पघड़ी पहना दी। उनका तो मुझ पर बहुत बड़ा उपकार है।''

ठेठ तक ऐसे शुद्ध परिणाम में स्थिर रहकर समता भाव में रहने से आत्मदशा की श्रेणियाँ चढ़ते गए। अंत में तमाम कर्मों का क्षय होने पर केवळज्ञान प्रकट हुआ। और उसी समय उनकी खोपड़ी फट गई। गजसुकुमार निवार्ण प्राप्त करके मोक्ष में गए।

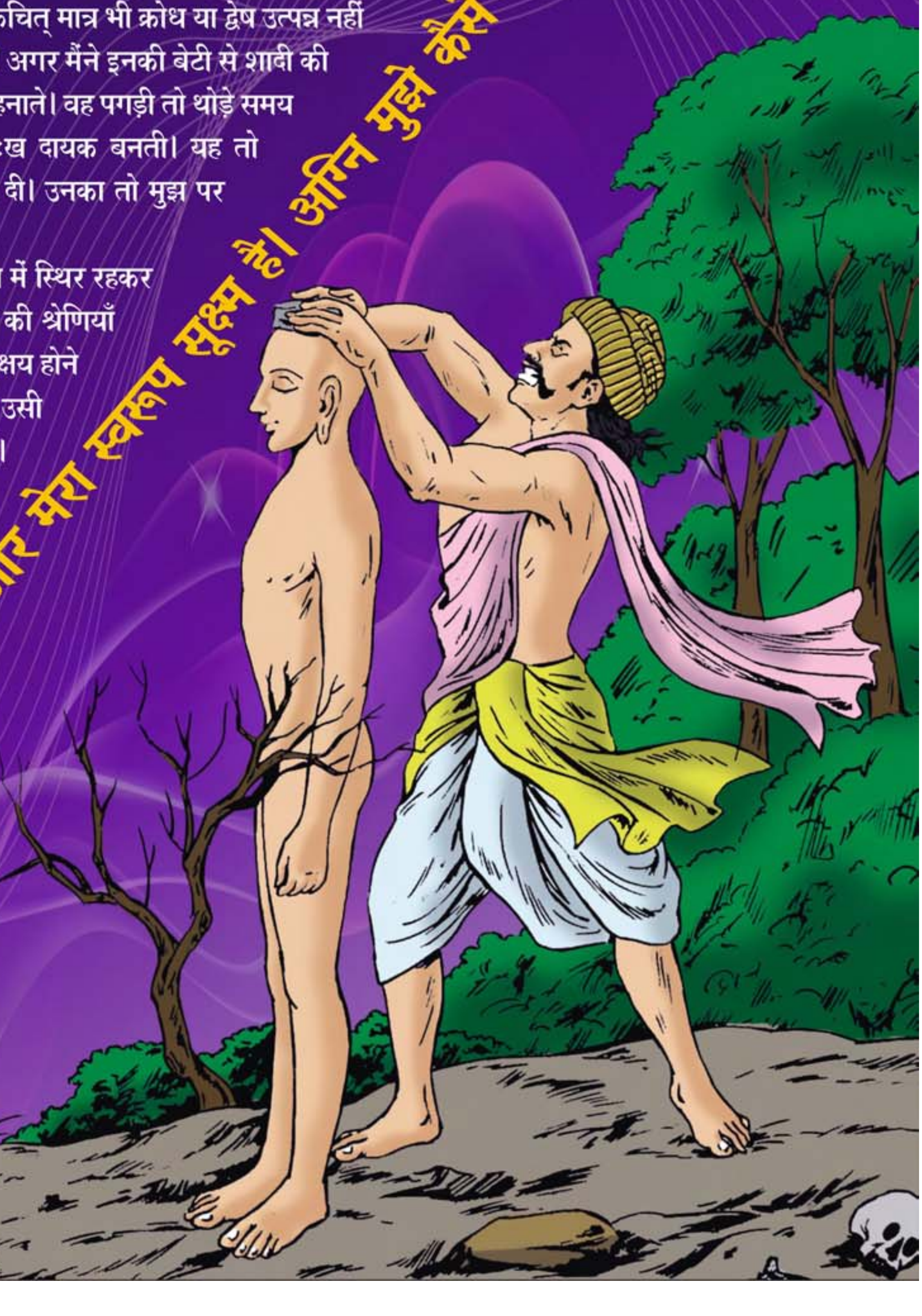

''अग्नि तो स्थूल है और मेरा स्वरूप सूक्ष्म है। अग्नि मुझे कैसे जला सकती है?''

जानने योग्य

छः आरे

जैसे अभी कलियुग माना जाता है, कलियुग यानी ऐसा (युग) समय कि जिसमें दुःख अधिक होते हैं, पाप अधिक होते हैं। इस प्रकार से अपने भरत क्षेत्र में कुल १२ प्रकार के (युग) समय हैं। जिन्हें 'आरा' कहा जाता है।

इनमें पहला आरा है - सुषमा-सुषम। अब इस आरे में सुख ही सुख होता है। इस आरे के लोगों का जीवन अत्यधिक लम्बा जीवन होता है। लम्बाई तीन गाऊ जितनी होती है। वे हर चौथे दिन खाना खाते हैं। इस काल को युगलिया काल कहते हैं। युगलिया यानी 'जुड़वाँ' इस काल में सभी स्त्रियाँ जुड़वा बच्चों को ही जन्म देती हैं, और बड़े होकर वे दोनों ही आपस में शादी करते हैं। वे भी जुड़वाँ बच्चों को ही जन्म देते हैं। अंत में दोनों की साथ में ही मृत्यु होती है। इस काल में हर प्रकार की इच्छा पूरी करनेवाले कल्पवृक्ष होते हैं। कल्पवृक्ष यानी ऐसे वृक्ष, जिनके पास से जो भी इच्छा करें, वह मिलता है। अतः उस समय के लोगों को कुछ भी पाने के लिए मेहनत, मज़दूरी या पैसे की ज़रूरत नहीं पड़ती।

दूसरे आरे का नाम- सुषम, यानी सुखवाला। इस समय में भी युगलिया होते हैं, वे हर तीसरे दिन खाना खाते हैं, लम्बाई दो गाऊ जितनी, लम्बा आयुष्य। इस काल में कल्पवृक्ष भी होते हैं। लेकिन पहले आरे के मुकाबले कम इच्छाएँ पूर्ण करते हैं।

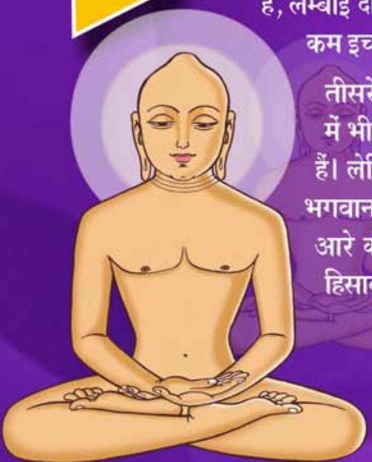

तीसरे आरे का नाम सुषमा-दुषम यानी कि इस आरे में सुख अधिक और दुःख कम होते हैं, इस आरे में भी युगलिया जीव होते हैं, कल्पवृक्ष होते हैं, लेकिन दूसरे आरे के मुकाबले कम इच्छाएँ पूर्ण करते हैं। लेकिन एक गाऊ की लम्बाई और हर दूसरे दिन भोजन करनेवाले लोग होते हैं, तीसरे आरे में भगवान ऋषभदेव का जन्म हुआ था। जब यह आरा पूरा होनेवाला था, तब भगवान ने जाना कि इस आरे के बाद कल्पवृक्ष नहीं रहेंगे, रोज़ भूख लगेगी आदि। इसलिए उन्होंने मानव जाति को रसोई, हिसाब, लिखना, तैरना, युद्धकला, सिलाई, आदि जीवन निर्वाह के लिए ज़रूरी ७२ कलाएँ सिखाईं।

चौथे आरे का नाम - दुषमा-सुषम, यानी कि दुःख अधिक और सुख कम। लम्बाई पाँचसौ धनुष्य की होती है। इस काल के मनुष्य रोज़ भोजन करते हैं। बाकी के २३ तीर्थंकर इस आरे में जन्म लेते हैं।

और पाँचवे आरे का नाम - दुषम, यानी कि दुःख मुख्य काल, सौ वर्ष की आयु और लम्बाई छः फुट। अभी पाँचवा आरा चल रहा है। इस काल के लोग एक दूसरे के साथ लड़ते-झगड़ते हैं। कुदरत भी अनियमित होती है। अतिवृष्टि, दुष्काल, अभाव कमी इस काल के लक्षण हैं।

छठे आरे का नाम - दुषमा-दुषम यानी कि दुःख ही दुःख, लोग १६ वर्ष की आयुवाले होते हैं। २-३ फुट की ही लम्बाई होती है। गंगा नदी छिछले गठरे जैसी, हिमालय छोटी पहाड़ी जितना हो जाएगा। इस काल में अत्यंत सर्दी, गर्मी और बरसात होते हैं । इस आरे में अग्नि नहीं होती अतः लोग मछली को गरम रेती में सेककर खाते हैं और एक दूसरे का खोपड़ी तोड़कर उसमें पानी पीते हैं, इस काल में धर्म का संपूर्ण नाश हो जाता है। जैसे-जैसे पाप कर्म बढ़ते जाते हैं, वैसे-वैसे छठे आरे में जन्म होता हैं।

छठे के बाद फिर से छठा, पाँचवा, चौथा, तीसरा, दूसरा और पहला यों फिर से छः आरे आते हैं, उनमें फिर २४ तीर्थंकर होते हैं। ऐसे कुल बारह आरे पूर्ण हो जाएँ, तब एक कालचक्र पूरा होता है।

पहेलियों के जवाब

१

२

जवाब : (१) भावना से सुधरे जन्मों-जन्म

जवाब : (२) बिना हेतु के पैसे खर्च करना, गुनाह है।

५

३

उ	के	ल
के	र	म
ल	म	णा

मं	दी	र
दी	न	ता
र	ता	लु

स्टोरी टेलींग, क्राफ्ट एक्टिवटीज़,
रमत-गमत, भक्ति-गरबा
और ग्रुप फोटो वगैरह
से किड्स केम्प की झलक

बेंगलोर

अक्रम एक्सप्रेस

May 2012
Year : 1, Issue : 1
Conti. Issue No.: 1

BALVIGNAN

Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set-1
on 08th of every month

Printer, Publisher and Owner - Mr. Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Mr. Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, 5, Mamtapark Society, Bh. Navgujarat College,Usmanpura, Ahmedabad-14.